Semester II

Pedagogy History 7 A

Unit VI: Examination and Evaluation of History

a. Introduction
b. Meaning of Evaluation
c. Difference Between Evaluation And Measurement
d. Purpose of Evaluation
e. Techniques of Evaluation.
f. Essay Type Test.
g. New Type Tests or objective Type Tests
h. Types of objective Type Tests.
i. Defects of New Type Tests.
j. comparative study of objective Type And Essay Type Tests.
K. History Teacher And Evaluation Programme.
L. Specific Aims of History Teaching At The Secondary stage.

By.

Dr. Asha Kumari Gupta.

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन की प्रविधियाँ
(TECHNIQUES OF EVALUATION)

मूल्यांकन प्रविधि का अभिप्राय उस रीति से है, जिसके द्वारा हम बालक के ज्ञान और व्यवहार में हुए परिवर्तनों तथा उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं का मूल्यांकन करते हैं। **डॉ. बी. एस. ब्लूम** (B.S. Bloom) का मत है—

"अच्छी मूल्यांकन प्रविधि या साधन या रीति वह है जिसमें व्यवहार के वांछित परिवर्तन के वैध प्रमाणों का मापन करने की क्षमता है।"

हम समस्त व्यवहार-परिवर्तनों को किसी एक रीति द्वारा नहीं जाँच सकते हैं, वरन् विभिन्न व्यवहार-परिवर्तनों को जाँचने के लिए विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग करते है। अतः मूल्यांकन में विभिन्न प्रविधियों का समावेश है। इसकी पुष्टि राइटस्टोन के इस कथन से हो जाती है **"आधुनिक मूल्यांकन में जाँच की विविध प्रविधियों—उपलब्धि, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व, चरित्र-सम्बन्धी परीक्षण क्रम, निर्धारण-मान, प्रश्नावली, प्रतिफलों के निर्णय मान, साक्षात्कार, नियन्त्रित-निरीक्षण प्रविधियाँ, समाजमितिक प्रविधियाँ तथा घटनावृत्तों का प्रयोग होता है।"**

"Modern evaluation uses a variety of techniques of appraisal such as achievement, attitude, personality, character test, rating scales, questionnaires, judgement scale of products, interviews, controlled observation techniques, sociometric techniques and anecdotal records.

—J. W. Wrightstone

इनमें से प्रमुख प्रविधियों का विवेचन नीचे दिया जा रहा है—

(1) **निरीक्षण-प्रविधि**—इसके द्वारा छात्रों के व्यवहार, क्रियाओं, संवेगात्मक एवं बौद्धिक परिपक्वता के सम्बन्ध में प्रमाण प्रदान किये जाते हैं।

(2) **साक्षात्कार**—इसके द्वारा रुचियों के विकास, दृष्टिकोणों में हुए परिवर्तनों तथा व्यक्तिगत विशेषताओं की जाँच की जाती है।

(3) **प्रश्नावली**—छात्रों में उनकी स्वयं की रुचियों एवं अभिवृत्तियों के विकास से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए यह प्रविधि बहुत सरल एवं उपयोगी है।

(4) **क्रम निर्धारण मान**—इस प्रविधि का प्रयोग उन विभिन्न परिस्थितियों या विशेषताओं का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, जो विभिन्न मात्राओं में प्रस्तुत की जाती हैं। इसके द्वारा हम बालकों की किसी विशेष क्षेत्र की कुशलताओं की जाँच उस क्षेत्र में उसके व्यवहार की प्रगति को देखकर भी कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

(5) छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ—छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ (Pupil's Products) भी उसके व्यवहार एवं रुचि सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण साधन प्रदान करती हैं।

(6) पड़ताल-सूची—पड़ताल-सूची (Check-list) प्रश्नावली की भाँति व्यक्तिगत सूचना एवं मत जानने का प्रमुख साधन है।

(7) अभिलेख—छात्रों की डायरियाँ, शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए घटनावृत्त (Anecdotal records) तथा संचित अभिलेख-पत्र भी मूल्यांकन की महत्त्वपूर्ण प्रविधियाँ हैं।

(8) परीक्षा प्रविधि—इस प्रविधि के अन्तर्गत मौखिक परीक्षण, प्रयोगात्मक परीक्षाएँ तथा लिखित परीक्षाएँ आती हैं। लिखित परीक्षाओं में निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ प्रमुख हैं।

(अ) मौखिक परीक्षा (Oral Examination)—इस प्रविधि का प्रयोग पढ़ने की योग्यता, उच्चारण एवं सूचनाओं की जाँच तथा लिखित परीक्षाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। यह प्रविधि चारित्रिक रूप से वैयक्तिक है। इसके द्वारा बालकों के व्यक्तिगत गुणों तथा अवगुणों से अवगत हो सकते हैं। इसमें छात्र परीक्षक के समक्ष उसके प्रश्नों का उत्तर देता है, जिससे कि परीक्षक उसके आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति आदि की जाँच करने में समर्थ होता है।

(ब) प्रायोगिक परीक्षा (Practical Examination)—इसका प्रयोग प्रयोगात्मक विषयों, विज्ञान, हस्तकला, ड्राइंग, कृषि आदि में किया जाता है। इसमें बालक अपने कार्य का नमूना परीक्षक के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(स) लिखित परीक्षा (Written Examination)—शिक्षा-आयोग ने लिखा है "भारत में मूल्यांकन के लिए प्रचलित सामान्य पद्धति लिखित परीक्षा है।" वस्तुतः भारत में यही एकमात्र पद्धति प्रचलित है। इसमें भी दोषों का प्रचलन हो गया है। लिखित परीक्षा के अन्तर्गत कार्य-समर्पण, प्रतिवेदन लिखना, प्रश्नों के उत्तर लिखना एवं कागज-पेंसिल परीक्षाएँ आती हैं। कागज-पेंसिल परीक्षाएँ छात्रों की ज्ञान-प्राप्ति एवं पाठ्य-वस्तु को संगठित तथा व्याख्या करने की योग्यता आदि की जाँच करने में बहुत उपयोगी हैं। लिखित परीक्षाओं के दो रूप **(क) निबन्धात्मक** (Essay Type), तथा **(ख) वस्तुनिष्ठ** (Objective Type) अधिक प्रचलित हैं। इनका पृथक्-पृथक् विवेचन आगे किया जा रहा है।

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner